Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2016 = 4.44, www.srjis.com
APR-MAY 2018, VOL- 6/27

अभिभावकीय आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन

देवेन्द्र कुमार यादव

शोधछात्र, म. गा. अं. , हिन्दी वि. वि. वर्धा

Abstract

आज के इस प्रतियोगी युग में प्रत्येक नागरिक सफलता के उच्चतम शिखर तक पहुँचना चाहता है| परन्तु सफलता प्राप्ति के लिए वह किन साधनों का का उपयोग करता है, यह बात मायने रखती है | यदि हम अपने बच्चे की रुचि एवं योग्यता को नजरअंदाज करते हुए अपने आकांक्षा के अनुसार उसे डॉक्टर या अभियांत्रिक के रूप में देखना चाहते हैं,तो यह बहुत ही असंभव कार्य है | हमें अपने बच्चे की रूचि एवं योग्यता के अनुसार कार्य करने देना चाहिए तभी हमारा बच्चा सफल होगा | प्रस्तुत शोध में अभिभावकों की आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है |अभिभावकीय आकांक्षा जानने हेतु स्वनिर्मित उपकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के स्कोर कार्ड का प्रयोग किया गया है | अध्ययन के मुख्य परिणाम में पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि ग्रेड में कोई विशेष अंतर नहीं है यहाँ दोनों क्षेत्र के विद्यार्थियों ने अपनी उपलब्धि में अच्छा निष्पादन किया है | ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है | ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा में सार्थक अंतर है | विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य निम्न स्तर का सहसंबंध है |इस शोध के माध्यम से शोधार्थी इस तथ्य पर समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता है कि हमें अपनी आकांक्षा अपने बच्चों पर नहीं थोपना चाहिए बल्कि उनकी रुचि के अनुसार वे जो बनना चाहते हैं, उन्हें स्वछन्द छोड़ देना चाहिए तभी हमारे बच्चे एक सफल नागरिक बन पायेंगे|

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

आज की दुनिया दिन प्रति-दिन प्रतिस्पर्धी होती जा रही है | प्रदर्शन की गुणवत्ता व्यक्तिगत प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कारक बनती जा रही है । उत्कृष्टता विशेष रूप से, अकादमिक और प्रायःअन्य सभी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में देखी जाती है । प्रत्येक माता–पिता की इच्छा होती है कि उनके बच्चे उत्कृष्ट प्रदर्शन करें | इस उपलब्धि के उच्च स्तर की इच्छा से हमारे बच्चों, छात्रों, शिक्षकों, संस्थाओं और सामान्य शिक्षा प्रणाली में बहुत ही दबाव पड़ता है तथा ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा की पूरी व्यवस्था शैक्षिक उपलब्धि के इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है | इस प्रकार, हम देखते हैं कि अधिकांश स्कूलों में केवल यही प्रयास रहता है कि वे बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि कैसे करें? शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए यह शोध का विषय है कि कौन- से कारक छात्रों की उपलब्धि को बढ़ावा देते हैं | कौन से कारक अकादमिक उत्कृष्टता की दिशा में योगदान करते हैं ? ऐसे प्रश्नों के उत्तर देना मानव व्यक्तित्व की जटिलता के कारण आसान नहीं हैं । उत्कृष्टता में सुधार के लिए हम प्रायः प्रयास करते हैं एवं तरह-

तरह की युक्ति का प्रयोग करते हैं | इसलिए शोधकर्ताओं द्वारा अनेक कारकों की परिकल्पना की जाती है और शोध भी किए किये जाते हैं | वे विभिन्न निष्कर्ष के साथ अपने परिणाम को सामान्यीकृत करते हैं | शैक्षणिक उपलब्धि पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य एवं अध्ययन की आदत से भी निर्धारित होती है |

आकांक्षा कोई व्यक्ति जो भी कार्य करता है उसमें एक निश्चित लक्ष्य या प्रवीणता प्राप्त करना चाहता है | लक्ष्य एवं आकांक्षायें व्यक्ति की क्षमताओं के अनरूप, उससे उच्च अथवा निम्न हो सकती हैं |

अभिभावकीय आकांक्षा

यदि हम अभिभावकीय आकांक्षा को परिभाषित करते हैं , तो हमें पूर्ववर्ती शोधों में दो शब्द मिलते हैं एक Aspiration (आकांक्षा) और दूसरा Expectations (अपेक्षा) | अभिभावकीय आकांक्षा एवं अभिभावकीय अपेक्षा में कुछ विरोधाभास है | अभिभावकीय आकांक्षा का तात्पर्य अभिलाषा, कामना या ऐसा लक्ष्य जिसे अभिभावक अपने बच्चों के भावी भविष्य के लिए निर्माण करते हैं एवं अपेक्षा शब्द का प्रयोग बच्चा यथार्थ में क्या प्राप्त करेगा इसकी आशा की जाती है |

औचित्य

प्रत्येक अभिभावक की यह आकांक्षा होती है कि हमारे बच्चे शिक्षित होकर एक सफल नागरिक ब नें| परन्तु अभिभावकों की आकांक्षा भी उच्च स्तर की होती है | बच्चों की क्षमता एवं रूचि को जाने बिना हमारे अभिभावक यह आकांक्षा रखते हैं कि हमारा बच्चा एक सफल चिकित्सक, अभियांत्रिक एवं आई.ए.एस.अधिकारी ही बने हमारे अभिभावक यह नहीं जानने का प्रयास करते हैं कि हमारे बच्चे की रूचि क्या है? दूसरी ओर यदि हम अपना ध्यान आकर्षित करते हैं तो यह पाते हैं कि जब बच्चा स्कूल में प्रवेश करता है तो प्रत्येक अभिभावक का ध्यान बच्चों के स्कोर कार्ड पर रहता है यानि विगत परीक्षा में हमारा बच्चा कितना अंक हासिल किया | व्यक्तिगत भिन्नता (individual differences) का ध्यान देते हुए एवं प्रतिभाशाली बच्चों को छोड़कर यदि हम अपना ध्यान बच्चों के स्कोर कार्ड पर इंगित करते हैं तो पाते हैं कि अधिकांश बच्चों की उपलब्धि किसी न किसी एक विषय में कम ही रहती है | अमुक विषय में कम अंक क्यों है इसका पता लगाये बिना हमारे अभिभावक अपने बच्चों से यह अपेक्षा रखते हैं कि प्रत्येक विषय में हमारे बच्चे का अधिक अंक क्यों नहीं हैं? आज की मूल्यांकन पद्धति चाहे कैसी भी क्यों न हो हमारे अभिभावकों की यह इच्छा होती है कि हमारे बच्चे उच्चतम् से उच्चतम् शिखर पर पहुंचे |यदि हम अपना ध्यान राष्ट्रीय पाठ्यचर्या,(2005) पर इंगित करते हैं

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तो बच्चों के शैक्षिक मूल्यांकन में यह बात कही गयी है कि भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और दुश्चिंता से जुड़ा हुआ है....शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादन जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए|

शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि के चक्कर में हमारी शिक्षा प्रणाली आज भी रटंत पद्धति को जन्म देती है |जैसे कि पॉल फ्रेरे द्वारा लिखित उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र में वे कहते हैं कि शिक्षक छात्रों को पात्र या बर्तन बना देते हैं, जिन्हें शिक्षक द्वारा भरा जाना होता है | जो इन पात्रों को जितना ज्यादा भर सके वह उतना ही अच्छा शिक्षक है | जो जितने दब्बूपन के साथ स्वयं को भरने दे, वे उतने ही अच्छे छात्र हैं | इस प्रकार शिक्षा बैंक में पैसा जमा करने के भांति छात्रों में ज्ञान राशि जमा करने का माध्यम बन जाती है, जिसमें शिक्षक जमाकर्ता होता है और छात्र जमादार (डिपोजिटरी) होते हैं |

शोध उद्देश्य

1. कक्षा 7 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना |
2. विद्यार्थियों की अभिभावकीय आकांक्षा का अध्ययन करना |
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना |
4. ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धित आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना |
5. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना |

शोध विधि

यह शोध मिश्रित विधि पर आधारित है | जिसमे वर्णनात्माक अनुसन्धान का प्रयोग किया गया है | जहाँ हम अभिभावकीय आकांक्षा के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन किये हैं साथ ही साथ हम गुणात्मक आकंड़ों को भी एकत्रित किये हैं, जिससे यह जानने का प्रयास किया गया कि अभिभावकों की आकांक्षा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को कैसे प्रभावित करती है?

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा जनसंख्या के रूप में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को लिया गया है और इन्हीं विद्यार्थियों के अभिभावकों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है|

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में अग्रगामी हाईस्कूल पिपरी मेघे के 64 विद्यार्थियों को लिया गया है जो कक्षा 8 में पढ़ते है और इनके ही अभिभावकों को शामिल किया गया है |

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण के लिए शोधकर्ता द्वारा इस उद्देश्य हेतु अभिभावकीय आकांक्षा से सम्बंधित स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया । प्रश्नावली में शैक्षिक उपलब्धि से सम्बंधित सात प्रश्न , अभिभावकीय आकांक्षा से सम्बंधित अट्ठारह प्रश्न एवं पाठ्यसहगामी क्रिया से सम्बंधित आठ प्रश्नों का निर्माण किया गया है | विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के आकलन हेतु कक्षा 7 पास के स्कोर कार्ड का प्रयोग किया गया है |

अध्ययन के परिणाम एवं व्याख्या

उद्देश्य 1: कक्षा 7 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना|

ग्रामीण/शहरी विद्यार्थियों की संख्या व उसका प्रतिशत

प्रतिशत रेंज	ग्रेड	ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या	शहरी विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (ग्रामीण)	प्रतिशत (शहरी)
91-100	A_1	0	1	0	4
81-90	A_2	9	8	27	26
71-80	B_1	7	12	21	39
61-70	B_2	12	6	36	19
51-60	C_1	4	4	12	12
41-50	C_2	1	0	4	0
कुल		33	31	100	100

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि

A_1 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या नगण्य है एवं 4 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने A_1 ग्रेड प्राप्त किये हैं | 27 प्रतिशत ग्रामीण और 26 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने A_2 ग्रेड किया है | जिससे हम यह कह सकते हैं कि A_2 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में केवल 1 प्रतिशत का अंतर है | 21 प्रतिशत ग्रामीण एवं 39 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने B_1 ग्रेड प्राप्त किया है, जहाँ 18 प्रतिशत का अंतर दृष्टिगोचर होता है | 36 प्रतिशत ग्रामीण एवं 19 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने B_2 ग्रेड प्राप्त किया है यहाँ दोनों विद्यार्थियों में मध्य 17 प्रतिशत का अंतर है | C_1 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संख्या समान है जहाँ दोनों भागीदारी 12 -12 प्रतिशत है | C_2 ग्रेड मात्र एक ग्रामीण विद्यार्थी ने प्राप्त किया है जबकि कोई भी शहरी विद्यार्थी C_2 ग्रेड नहीं प्राप्त किया है |

यहाँ हम यह देखते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई विशेष अंतर नहीं है यहाँ दोनों क्षेत्र के विद्यार्थियों ने अपनी उपलब्धि में अच्छा निष्पादन किया है |

उद्देश्य 2: विद्यार्थियों की अभिभावकीय आकांक्षा का अध्ययन करना|

ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों की आकांक्षा

अभिभावकीय आकांक्षा से पता चला कि अधिकांश अभिभावक अपने बच्चे को डॉक्टर, इंजीनियर, एवं आई.ए.एस एवं पी.सी.एस .ही बनाना चाहते हैं | बहुत ही नाम मात्र के अभिभावक मिले जो अपने बच्चे की रूचि एवं क्षमता के अनुसार मार्गदर्शन करते हैं | यह हमारे समाज की विडम्बना है कि सारे अभिभावक अपनी आकांक्षा को अपने बच्चों के ऊपर थोपते हैं | साथ ही साथ हम यह कह सकते हैं कि अगर समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों को डॉक्टर , इंजीनियर एवं आई.ए.एस. ही बनाना चाहेगा तो समाज का अन्य कार्य कैसे होगा | शोधार्थी के एक प्रश्न में संगीतज्ञ/ कलाकार / नर्तक /खिलाड़ी का विकल्प था जिसमें यह पूछा गया था कि अगर आप का बच्चा उपर्युक्त विकल्प का चयन करता है , तो आप यह बात पसंद करेंगे तो प्रश्न के जबाब में नाम मात्र के ही अभिभावकों को यह बात पसंद आई | जब शोधार्थी दूसरी बार क्षेत्र में सबसे कम आकांक्षा वाले एवं सबसे ज्यादा आकांक्षा प्राप्तांक वाले अभिभावकों से मिला और पूछा कि आप अपने बच्चे को संगीतज्ञ /कलाकार/ नर्तक/ खिलाड़ी/ क्यों नहीं बनाना चाहते हैं तो उन्होंने जबाब दिया कि जिनके बच्चे पढ़ाई- लिखाई में अच्छे नहीं होते हैं वे इन सभी चीजों में रुचि लेते हैं | मात्र एक अभिभावक का विचार अन्य अभिभावकों के विचार से अलग

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

था वह अपने बच्चे को प्रकृति से सम्बंधित शोध कार्य करवाना चाहते थे और एक अन्य अभिभावक थे जो अपने बच्चे को अच्छा नागरिक,नेक ईमानदार इंसान, गरीब एवं विकलागों की सेवा हेतु देखना चाहते थे | कुछ ऐसे भी अभिभावक थे जो अपने बच्चे को इंजीनियर ही बनाना चाहते थे परन्तु उनके बच्चों का शैक्षणिक रिकॉर्ड बिलकुल ही अच्छा नहीं था जो अपने परीक्षा में C_2 ग्रेड से उत्तीर्ण हुए थे |

उद्देश्य 3: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना|

H_{01}: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि हेतु तालिका

चर	माध्य	मानक विचलन	N	df	t-मान
ग्रामीण	71.86	10.79	33	62	1.99*
शहरी	73.93	9.99	31		

***सार्थकता स्तर 0.05**

हमारे शोध परिणाम में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् हम कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान है | जबकि पूर्ववर्ती शोध परिणाम हमारे शोध परिणाम से भिन्न है | जोशी और श्रीवास्तव (2009) ने अपने शोध परिणाम में पाया कि शहरी एवं ग्रामीण किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक अंतर है | शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों के अपेक्षा ज्यादा अंक हासिल किये | किशोरियों की तुलना में किशोरों का आत्म सम्मान ऊँचा पाया गया शैक्षिक उपलब्धि में लिंगीय भेद पाया गया | किशोरों की तुलना में किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि सार्थक रूप से ऊँची पाई गयी | हमारा शोध परिणाम पूर्ववर्ती शोध परिणामों से इसलिए भिन्न हैं क्योंकि आज के समाज में प्रत्येक वर्ग के लोग पढ़ाई के प्रति जागरूक हो गए हैं, चाहे वे ग्रामीण हों या शहरी हों आजकल सूचना एवं अनुदेशन तकनीकी का विस्तार धीरे- धीरे शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में समान रूप से होने लगा है, इस भौगोलिकरण के युग में प्रत्येक माता –पिता की अपने बच्चों से उत्कृष्टता की उम्मीदें बढ़ती जा रही हैं, इसलिए वे अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाना चाहते हैं, उनकी उचित देखभाल करते हैं, गृहकार्य में मदद करते हैं, पुस्तक मेला, विज्ञान प्रदर्शनी एवं शैक्षिक भ्रमण में ले जाना, शैक्षिक सीडी देखने का अवसर प्रदान करवाते हैं | इस तरह से हम देखते हैं कि आजकल के विद्यार्थी चाहे वे ग्रामीण हो या शहरी अभिभावक उनके प्रत्येक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शैक्षिणक कार्य में सहायता करते हैं यदि ग्रामीण अभिभावक अपने बच्चों की पढ़ाई- लिखाई में स्वयं सहायता नहीं कर पाते हैं तो वे होम ट्यूशन लगाते हैं, उनकी यही आकांक्षा रहती है कि मेरा बच्चा पढ़-लिखकर एक महान इंसान बने | दूसरी ओर हम देखते है आज कल समावेशी एवं एकीकृत शिक्षा का विस्तार तेजी से हो गया है, जिससे हमारे दिव्यांग बच्चों को भी किसी प्रकार की समस्या नहीं हो रही है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2015 में नीचे से ऊपर बढ़ने की नीति अपनाई गई है, जिससे समुदाय की चर्चा/ बहस, प्रतिभागिता आरम्भ होती है | इस नीति की यह अनूठी विशेषता है और नीति निर्माताओं को समुदाय की चिंता एवं वस्तु स्थिति समझाने हेतु तथा नीतिगत ढ़ाचा में इन मुद्दों को पर्याप्त रूप से शामिल करने हेतु प्रतिभागिता वाला दृष्टिकोण आवश्यक था | समावेशी शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2015 इस प्रयास में सफल है | राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2015 ने शिक्षा व्यवस्था के सभी अंगों में विकलांगता को शामिल किया है चाहे शिक्षा में प्रवेश हो, शिक्षण की रणनीतियां हों, पठन सामग्री हो, मूल्यांकन व्यवस्था हो, आभासी शिक्षा माध्यम हो | (योजना, मई 2016)

इस प्रकार से हम देखते हैं कि आज हमारे समाज की शैक्षिक विषमताओं को कम करने के लिए हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण, संरचनावादी उपागम, स्मार्ट क्लास,सूचना एवं जनसंचार तकनीकी और साथ ही साथ संविधान का 73वाँ व 74वाँ संशोधन स्थानीय समुदायों को अपने बच्चों के लिए शिक्षा में निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए एक वैधानिक संस्थागत अवसर मुहैया करवाता है जो एक महत्त्वपूर्ण बदलाव है |

उद्देश्य - 4: ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना |

H_{02}: ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

तालिका: ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षाहेतु तालिका

चर	माध्य	मानक विचलन	N	df	t-मान
ग्रामीण	57.24	6.36	33	62	2.05*
शहरी	58.84	3.96	31		

***सार्थकता स्तर 0.05**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यहाँ t-मान 2.05 और df 62 है |यह मूल्य 't' तालिका के 0.05 स्तर के मूल्य से ज्यादा है | इसलिए 't' प्राप्तांक मूल्य सार्थक होने की वजह से शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है |

इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा में वास्तव में अंतर है | मध्यमानों को देखने से यह ज्ञात होता है कि शहरी अभिभावकों की उपलब्धि आकांक्षा सम्बंधित मध्यमान (58.84) तथा ग्रामीण अभिभावकों का उपलब्धि आकांक्षा सम्बंधित मध्यमान (57.24) है | अतः हम कह सकते हैं कि शहरी अभिभावकों की आकांक्षा ग्रामीण अभिभावकों की आकांक्षा से ऊँची है | यहाँ पर हम ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों की आकांक्षा के मानक विचलन को देखते हैं तो दोनों में 2.4 का अंतर दिखाई देता है, किन्तु माध्य में 1.6 का अंतर दिखता है | जबकि तालिका मूल्य देखने से पता चलता है कि सार्थक रूप से अंतर है | पूर्ववर्ती शोध परिणाम भी हमारे शोध परिणाम के ही समान है | यामामोटो और होलोवे (2010) ने अपने शोध शीर्षक 'अभिभावकीय आकांक्षा और बच्चों की अकादमिक निष्पत्ति का सामाजिक सांस्कृतिक सन्दर्भ' में अध्ययन किया जिसमें एशियन अमेरिकन अभिभावकों की आकांक्षा वर्गीय समूह (Racial/ Ethnic) के अभिभावकों से ऊँची थी | जैकब और हार्वे (2005) ने अपने शोध परिणाम में यह पाया कि उच्च श्रेणी के विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों की आकांक्षा सार्थक रूप से औसत श्रेणी के विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिभावकीय आकांक्षा से ऊँची पाई गयी और उच्च श्रेणी के विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक अपनी आकांक्षा लम्बे समय तक बनाये रखते हैं | गॅलिक और व्हाइट (2004) ने अपने शोध में एशियन अभिभावकों और लेटिनो अभिभावकों की आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया | जिसमे उन्होंने ने एशियन अभिभावकों की आकांक्षा लेटिनो अभिभावकों की आकांक्षा से ऊँची पाया |

उद्देश्य 5: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना |

H_{02}: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका :विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध हेतु तालिका

चर (Variable)	संख्या (N)	सहसंबंध (r)	मुक्तांश (df)
विद्यार्थी एवं अभिभावक	128	0.347	126

* 0.05 स्तर पर 'r' का मान = 0.174

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध 'r' = 0.347 एवं df 124 है | यह 'r' तालिका के 0.05 स्तर से ज्यादा है | इसलिए 'r' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है |

अतः यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य निम्न स्तर का सहसंबंध है | किन्तु पूर्ववर्ती शोध परिणाम हमारे शोध परिणाम से बिलकुल भिन्न है जिसे हम देख सकते हैं | जैकब (2010) ने अपने शोध में पाया कि जो माता - पिता कॉलेज के बारे में जानकारी रखते है एवं बच्चों का घर एवं घर के बाहर ध्यान देते हैं गृह कार्य में मदद करते है उन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि ऊँची होती है | Glick और White (2004) ने अपने शोध में एशियन अभिभावकों और लेटिनो अभिभावकों की आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया | जिसमे उन्होंने एशियन अभिभावकों की आकांक्षा लेटिनो अभिभावकों की आकांक्षा से ऊँची पाया| फेन और चेन (2001) ने अपने अध्ययन में अभिभावकीय आकांक्षा और शैक्षिक उपलब्धि के बीच मजबूत सहसंबंध पाया और यहाँ r .60 के बीच देखने को मिला | सिंह (1996) ने अपने अध्ययन में पाया कि ऊँची सामाजिक आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है |

अतः हम कह सकते हैं कि आजकल के विद्यार्थी स्व अभिप्रेरित होते हैं | अभिभावकों की आकांक्षा का उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है | जिसका कारण विद्यालयी वातावरण, समाज, पारिवारिक वातावरण एवं सूचना एवं अनुदेशन तकनीकी हो सकती है |

शैक्षिक निहितार्थ

अभिभावकों को व्यक्तिगत भिन्नता का ध्यान रखते हुए प्रत्येक बच्चे से एक समान शैक्षिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं करना चाहिए | बच्चों की क्षमता एवं रुचि के अनुसार उनके कैरियर चुनाव की स्वतंत्रता देना चाहिए | हमें प्रत्येक बच्चे से डॉक्टर, इंजीनियर, एवं आई.ए.एस बनने की अपेक्षा नहीं करना चाहिए | अभिभावकों को हमें परामर्श देना चाहिए ताकि वे अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से न करें | स्कूल स्तर पर कैरियर चुनाव के लिए व्यवसायिक निर्देशन की व्यवस्था होनी चाहिए | दूसरी ओर हम देखते हैं कि शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि के चक्कर में आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली रटंत पद्धति को जन्म दे रही है | इसके लिए हमें संरचनावादी उपागम से अध्ययन अध्यापन पर जोर देना चाहिए | अगर हमारा बच्चा परीक्षा में कम अंक लाता है तो हमें डाटना नहीं चाहिए बल्कि अगली बार अच्छे करने के लिए उसका उत्साहवर्धन करना चाहिए | विद्यालय में निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए | दिव्यांग बच्चों को भी हमें अपने स्कूल में आत्मसात करना चाहिए | व्यक्ति किसी भी स्थान पर हो, किसी भी उम्र का हो, स्त्री हो या पुरुष अथवा विकलांग हो, प्रत्येक जीवन की एक योजना है, एक उद्देश्य है, एक मूल्य है | यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि विकलांग व्यक्ति सर्वाधिक प्रेरणास्पद व्यक्ति होते हैं | उन्हें समान अवसर देना चाहिए और अपनी अलग क्षमताओं के साथ वे सामान्य व्यक्तियों से अधिक शाक्तिशाली तथा क्षमतावान सिद्ध होंगे और यदि हम सभी इसे स्वीकार कर लेते है तो समाज में परिवर्तन हो सकता है |

अंततः इस शोध अध्ययन से निष्कर्ष आता है कि हमें अभिभावकों को परामर्श देने की आवश्कता है एवं अध्ययन- अध्यापन की प्रणाली में सुधार लाने की आवश्कता है |

सन्दर्भ सूची

कोम्बस, आर. *&* ***डेविस, वी.*** *(1965).* ***सोशियल क्लास स्कालिस्टिक एषपिरेशन एंड एकेडमिक एचीभमेंट. द पेसिफिक सोशिओलाजिकल रिव्यू,*** *8(2), 96-100. doi:1. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/1388475 doi:1*

कारपेंटर, डी.एम. *(2008).* ***एक्सपिटेशन, एषपिरेशन एंड एचीभमेंट एमंग लेटिनो स्टूडेंट्स ऑफ एमीग्रेंट फ़ेमिलीज़. मैरेज़*** *&* ***फ़ेमिलीज़ रिव्यू,*** *43(1-2), 164-185.*

डेविसकीन,पी.ई. *(2005).* ***द इंफ्लुएंस ऑफ पैरेंट एजुकेशन एंड फ़ैमिली इनकम ऑन चाइल्ड एचीभमेंट: द इनडाईरेक्ट रोल ऑफ पैरेंटल एक्सपिटेशन एंड होम इनवारमेंट. जर्नल ऑफ फ़ेमिली साइकोलाजी,*** *19(2), 294.*

फ्रेरे, पी. *(2005).* ***पेड़ागाजी ऑफ आपरेस्ड़. न्यूयार्कः द कंटिनम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप.***

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

*फेन, एक्स. & चेन, एम. (2001). **पैरेंटल इनवाल्भमेंट एंड स्टूडेंटस एकेडमिक एचीभमेंटः ए मेटा एनालसिस. एजुकेशनल साइकोलाजी रिव्यू,** 13(1), 1-22.*

*ग्रोसमैन, जे.ए. एट ऑल. (2011). **पैरेंटल एक्सपिटेशन एंड एकेडमिक एचीभमेंटः मेडीएटर एंड स्कूल इफेक्ट्स. एनवल कनवेंशन ऑफ द अमेरिकन साइकोलाजीकल एसोशिएशन, वाशिंगटन डीसी(वैलुम.**4)*

*जैकब, एम.जे. (2010). **पैरेंटल एक्सपिटेशन एंड एषपिरेशन फॉर देयर चिल्ड्रेन्स एजुकेशनल एटेनमेंटः एन इजामिनेशन ऑफ द कॉलेज गोइंग माइंडसेट एमंग पैरेंट्स.** (**डॉक्टरल दिजरटेशन, यूनिवर्सीटी ऑफ मिनिसोटा**).*

*मऊ, डब्लू. सी. (1995). **एजुकेशनल प्लानिंग एंड एकेडमिक एचीभमेंट ऑफ मिडिल स्कूल स्टूडेंट्सः ए रेसिकल एंड कल्चरल कंपरिज. जर्नल ऑफ काऊनस्लिंग एंड डेवलपमेंटः जेसीडी,** 73(5), 518.*

*ओकागाकी, एल. & फ्रेंच पी. ए. (1998). **पैरेंटिंग एंड चिल्ड्रेन्स स्कूल एचीभमेंटः ए मल्टीएथनीक. पर्सपेक्टिव. अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल,** 35(1), 123-144.*

*रेटी, एच. (2006). **व्हाट कम्स आफ्टर कम्पलसरी एजुकेशन?** **ए फॉलो अप स्टडी ऑन पैरेंटल एक्सपिटेशन ऑफ देयर चाइल्डस फ्युचर एजुकेशन. एजुकेशनल स्टडीज,** 32(1), 1-16.*

*सिंह, एस. (1998). **डिटरमिनेशन ऑफ लर्नर एचीभमेंट एट प्राइमरी स्टेज. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू,**31, 47-68.*

*ट्रस्टी, जे. (1998). **फ़ेमिली इंफ्लुएंस ऑन एजुकेशनल एक्सपिटेशन ऑफ लेट एडोल्सेंट्स. द जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च,** 91(5), 260-271.*

*वुड, डी. एट. आल. (2007). **जेंडर डिफरेंस इन द एजुकेशनल एक्सपिटेशन ऑफ द अरबन, लो इनकम अफ्रीकन यूथः द रोल ऑफ पैरेंट्स एंड द स्कूल. जर्नल ऑफ यूथ एडोल्सेंट्स,** 36(4), 417-427.*

*जहान, एम. (2006). **असेस्ट्स, पैरेंटल एक्सपिटेशन एंड इनवाल्भमेंट एंड चिल्ड्रेनस एजुकेशनल परफारमेंस. चिल्ड्रेन एंड यूथ सर्विस रिव्यू,** 28(8), 961-975*

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies